शीव कल्याण केंद्र

हनुमान टेकड़ी, माता रमाबाई आंबेडकर उद्यान,
सायन कोलीवाड़ा, मुंबई - 400022 | # 9987785567
www.skkvhp.com | skk.vhp@gmail.com

नवंबर / दिसंबर 2025

वृत्त पत्रिका

अंक : 2

विषय सूची

- संघर्ष से स्वावलंबन तक – नीतू पाठक की प्रेरणादायक यात्रा . . .
- महिला स्वावलंबन की प्रेरक पहल . . .
- घरों-घरी हरीपाठ अभियान—पेन के जनजातीय गाँव में घर-घर पहुँचा आशीर्वाद
- पेण से वरवणे तक—सेवा की ऊष्मा, श्रद्धा का उजास . . . .
- श्री अशोक सिंघल रुग्ण सेवा सदन का नौवां वर्धापन दिवस

शीव कल्याण केंद्र

वृत्त पत्रिका

नवंबर / दिसंबर 2025

अंक : 2

शीर्षक: संघर्ष से स्वावलंबन तक – नीतू पाठक की प्रेरणादायक यात्रा

वाशी नाका, चेंबूर में रहने वाली नीतू पाठक एक साधारण परिवार से आती हैं। उनका जीवन भी सामान्य ढंग से आगे बढ़ रहा था, लेकिन अचानक परिस्थितियों ने एक कठोर मोड़ ले लिया। उनके पति गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। इलाज लंबा चला, काम बंद हो गया और परिवार की आय का एकमात्र सहारा खत्म हो गया। जिस घर में पहले सुकून था, वहाँ अब अनिश्चितता और चिंता ने जगह बना ली।

नीतू की दो बेटियाँ हैं—एक 12वीं कक्षा में पढ़ रही है और दूसरी 5वीं कक्षा में। बच्चों की पढ़ाई, पति का इलाज, घर का किराया और रोज़मर्रा का खर्च—सब कुछ नीतू के कंधों पर आ गया। बाहर जाकर नौकरी करना उनके लिए संभव नहीं था, क्योंकि पति की देखभाल और घर की पूरी जिम्मेदारी उन्हीं पर थी। ऐसे समय में बहुत-सी महिलाएँ टूट जाती हैं, लेकिन नीतू ने हार मानने के बजाय रास्ता खोजने का फैसला किया।

इसी कठिन दौर में शीव कल्याण केंद्र के वस्ती विकास प्रकल्प के अंतर्गत संचालित महिला सशक्तिकरण योजना नीतू के जीवन में आशा की किरण बनकर आई। योजना के तहत उन्हें एक सिलाई मशीन उपलब्ध कराई गई, ताकि वे घर बैठे ही आजीविका शुरू कर सकें। यह सहायता केवल एक मशीन तक सीमित नहीं थी—यह भरोसे और आत्मसम्मान का संबल भी था।

सिलाई मशीन मिलने के बाद नीतू ने छोटे स्तर से काम शुरू किया। पहले पड़ोस के कपड़ों की सिलाई, फिर धीरे-धीरे ऑर्डर बढ़ने लगे। उनकी साफ-सुथरी सिलाई, समय की पाबंदी और मेहनत ने उन्हें पहचान दिलाई। काम के साथ-साथ उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता गया। आज नीतू नियमित रूप से सिलाई का कार्य कर अपने परिवार की आर्थिक ज़रूरतों को पूरा कर रही हैं।

अब वे न केवल घर का खर्च संभाल पा रही हैं, बल्कि बेटियों की पढ़ाई भी बिना रुकावट जारी है। सबसे अहम बात यह है कि नीतू अब स्वयं को असहाय नहीं, बल्कि सक्षम और आत्मनिर्भर महसूस करती हैं। उनके चेहरे पर आत्मविश्वास की चमक और भविष्य के प्रति आशा साफ दिखाई देती है।

नीतू पाठक की यह कहानी केवल एक महिला की सफलता की कहानी नहीं है, बल्कि यह संदेश देती है कि सही समय पर मिला मार्गदर्शन, थोड़ी-सी मदद और दृढ़ इच्छाशक्ति मिलकर जीवन की दिशा बदल सकते हैं । यह कहानी साबित करती है कि महिला सशक्तिकरण कोई नारा नहीं, बल्कि जमीन पर उतरकर जीवन बदलने वाली सच्चाई है। नीतू जैसी महिलाएँ समाज के लिए प्रेरणा हैं—जो दिखाती हैं कि संघर्ष चाहे जितना भी बड़ा हो, हिम्मत उससे बड़ी हो सकती है।

शीव कल्याण केंद्र

वृत्त पत्रिका

नवंबर / दिसंबर 2025

अंक : 2

शीर्षक: शीव कल्याण केंद्र के माध्यम से महिला स्वावलंबन की प्रेरक पहल

शीव कल्याण केंद्र द्वारा संचालित वस्ती विकास प्रकल्प के अंतर्गत गायकवाड नगर, चेंबूर की वस्ती में नियमित रूप से संस्कार वर्ग आयोजित किए जाते हैं। इन वर्गों का उद्देश्य केवल बच्चों और परिवारों में नैतिक मूल्यों का विकास करना नहीं है, बल्कि वस्ती के समग्र सामाजिक और आर्थिक उत्थान की दिशा में कार्य करना भी है। इसी उद्देश्य से संस्कार वर्गों के साथ-साथ वस्ती का विस्तृत सर्वेक्षण किया जाता है, ताकि वहां रहने वाले परिवारों, विशेष रूप से महिलाओं की वास्तविक स्थिति को गहराई से समझा जा सके।

सर्वेक्षण के दौरान एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि वस्ती की अधिकांश महिलाएँ अत्यंत परिश्रमी हैं। वे सुबह से लेकर दोपहर तक घर और परिवार की जिम्मेदारियों में पूरी तरह व्यस्त रहती हैं—बच्चों की देखभाल, भोजन बनाना, साफ-सफाई और अन्य घरेलू कार्यों में उनका अधिकांश समय बीत जाता है। इसके बावजूद दोपहर के समय उनके पास कुछ खाली समय होता है, लेकिन उस समय का उपयोग किसी भी आयवर्धक गतिविधि में नहीं हो पा रहा था। यह खाली समय उनकी क्षमता होते हुए भी आर्थिक अवसर के अभाव में व्यर्थ चला जाता था।

इस स्थिति को गंभीरता से समझते हुए शीवकल्याण केंद्र ने महिलाओं को घर बैठे रोजगार से जोड़ने का निर्णय लिया। यह स्पष्ट था कि ऐसा कार्य चुना जाए जो सरल हो, कम समय में किया जा सके और महिलाओं की दैनिक जिम्मेदारियों के साथ सहज रूप से समन्वित हो सके। इसी सोच के अंतर्गत महिलाओं को माला बनाने के कार्य से जोड़ा गया, जिसे वे अपने घर में बैठकर, विशेष रूप से दोपहर के खाली समय में, आसानी से कर सकती थीं।

शीव कल्याण केंद्र के मार्गदर्शन और सहयोग से महिलाओं को माला बनाने का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही, कार्य के लिए आवश्यक सामग्री भी उन्हें उपलब्ध कराई गई, ताकि शुरुआत में किसी प्रकार की आर्थिक बाधा न आए। प्रारंभ में महिलाओं ने संकोच और सीमित आत्मविश्वास के साथ छोटे स्तर पर काम शुरू किया। लेकिन जैसे-जैसे उनका अनुभव बढ़ता गया, उनकी कार्यकुशलता, गति और आत्मविश्वास में निरंतर वृद्धि होती गई।

आज गायकवाड नगर की वस्ती की कई महिलाएँ नियमित रूप से माला बनाकर अपनी आय अर्जित कर रही हैं। इस आय से वे अपने परिवार की छोटी-बड़ी जरूरतों में सहयोग कर पा रही हैं—चाहे वह बच्चों की पढ़ाई हो, घर का खर्च हो या किसी आकस्मिक आवश्यकता की पूर्ति। आर्थिक योगदान के साथ-साथ उनके आत्मसम्मान में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अब वे स्वयं को केवल घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं मानतीं, बल्कि परिवार की प्रगति में सक्रिय भागीदार के रूप में देखती हैं। . . . . .

शीव कल्याण केंद्र

वृत्त पत्रिका

नवंबर / दिसंबर 2025

अंक : 2

शीव कल्याण केंद्र के माध्यम से महिला स्वावलंबन की प्रेरक पहल . . . . . .

यह पहल इस बात का सशक्त उदाहरण है कि सही समय पर, सही दिशा में किया गया छोटा-सा प्रयास भी बड़े सामाजिक परिवर्तन का आधार बन सकता है। शीव कल्याण केंद्र के माध्यम से वस्ती की महिलाएँ आज संस्कार, श्रम और स्वावलंबन—इन तीन मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात कर रही हैं और अपने परिवार के साथ-साथ पूरे समाज को सशक्त बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

शीर्षक: घरों-घरी हरीपाठ अभियान—पेन के जनजातीय गाँव में घर-घर पहुँचा आशीर्वाद

डेटलाइन: पेन, 13 दिसंबर 2025

पेन क्षेत्र के एक जनजातीय गाँव में आज “घरों-घरी हरीपाठ” अभियान के तहत श्रद्धा और संस्कारों का अनुपम संगम देखने को मिला। प्रातःकालीन मंगलध्वनि के साथ संतों के सान्निध्य में हरिपाठ का सामूहिक पूजन और भावपूर्ण सत्संग आयोजित हुआ। ग्रामीणों—विशेषकर मातृशक्ति और युवाओं—की उत्साही भागीदारी ने पूरे वातावरण को भक्ति-रस से भर दिया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा पूज्य संत श्री का प्रत्येक परिवार तक स्वयं पहुँचना। सत्संग के उपरांत संत श्री ने गाँव की गलियों में पदयात्रा कर एक-एक घर का स्नेहपूर्वक द्वार खटखटाया और आशीर्वाद स्वरूप “हरिपाठ” ग्रंथ भेंट किया। विश्व हिंदू परिषद द्वारा प्रकाशित पवित्र हरिपाठ को लाल वस्त्र में ससम्मान बाँधा गया था—यह लाल आच्छादन श्रद्धा, मंगल और संरक्षण का प्रतीक माना गया। हर घर में दीपक प्रज्ज्वलित किए गए, तिलक और आरती की सुगंध से आँगन महक उठे, और परिजनों ने विनम्रतापूर्वक ग्रंथ का पूजन कर उसे घर के पूजा-स्थल में विराजित किया।

संत श्री ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि घर-घर हरीपाठ पहुँचाने का उद्देश्य केवल ग्रंथ-वितरण नहीं, बल्कि परिवारों में नित्य पाठ, भजन और सत्संग की परंपरा को सुदृढ़ करना है—ताकि नई पीढ़ी श्रद्धा, सेवा और सदाचार के मूल्यों से गहरे जुड़ सके। ग्रामजन ने भी इस पहल का स्वागत करते हुए प्रतिदिन सामूहिक या पारिवारिक पाठ का संकल्प लिया।

आज की विशेषता यह रही कि संत श्री स्वयं हर घर गए—किसी को बुलाया नहीं, बल्कि हर परिवार तक पहुँचे। ग्रामवासियों के अनुसार, जब संतजन अपने कर-कमलों से पवित्र ग्रंथ आशीर्वाद रूप में घर-घर पहुँचाते हैं, तो घरों का आध्यात्मिक वातावरण समृद्ध होता है, परंपराओं के प्रति प्रतिबद्धता प्रगाढ़ होती है और सामाजिक-सांस्कृतिक एकता सुदृढ़ होती है। इस पहल से परिवारों में नित्य-पूजन और सत्संग की प्रेरणा को स्थायी बल मिलता है।

संध्या को सामूहिक कीर्तन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। आयोजकों ने बताया कि “घरों-घरी हरीपाठ” अभियान आगे भी निरंतर चलेगा, जिसमें न केवल ग्रंथ-वितरण बल्कि पाठ-प्रशिक्षण, बाल-भजन मंडलियों की स्थापना, तथा नियमित सत्संग-सत्रों का आयोजना भी शामिल रहेगा—ताकि भक्ति, सेवा और संस्कारों का यह दीप हर घर में, हर दिन प्रज्वलित रहे।

संक्षेप में, पेन के जनजातीय गाँव में आज का दिन भक्ति, समरसता और सांस्कृतिक जागरण का सजीव उत्सव रहा—जहाँ लाल वस्त्र में सुशोभित पवित्र हरिपाठ केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि आशा, आस्था और अनुशासन का स्नेहिल संदेश बनकर हर घर पहुँचा।

शीव कल्याण केंद्र

वृत्त पत्रिका

नवंबर / दिसंबर 2025

अंक : 2

शीर्षक: पेण से वरवणे तक—सेवा की ऊष्मा, श्रद्धा का उजास

डेटलाइन: पेन, 14 दिसंबर 2025

सर्द हवाएँ जब पहाड़ियों से उतरकर जनजातीय बस्तियों के आँगन छूती हैं, तब किसी दूर के बंद कमरे में नहीं, लोगों के दिलों में आग जलनी चाहिए—सेवा की। पेण में अब तक 4000 कंबल पहुँच चुके हैं। इनमें से 1600 कंबल 25 आदिवासी गाँवों में बाँटे जा चुके हैं। और यह कारवाँ यहीं थमने वाला नहीं—विनोद भाई की ओर से 1200 तथा पराग भाई से 780 कंबल आने वाले हैं।

कुल मिलाकर 5900 कंबलों की यह ऊष्मा, इस सर्दी में अनगिनत परिवारों को सुकून देगी।

इसी सेवा-संस्कार की कड़ी में आज विलेपार्ले, मुंबई के स्वामीनारायण मंदिर के स्वामीजी वरवणे आदिवासी गाँव में पधारे। उनके आगमन के साथ ही वातावरण भक्ति-रस से भर उठा। स्वामीजी अपने साथ 235 स्वेटर लेकर आए—करुणा से भरे, स्नेह से बँधे। थोड़े समय के भजन-सत्संग के बाद जब वितरण शुरू हुआ, तो नन्हे कंधों की ठिठुरन पर जैसे किसी ने गर्म धूप रख दी। 205 स्वेटर वहीं बाँटे गए और 30 स्वेटर सहेजकर रखे गए, ताकि किसी दूसरे गाँव के शीत से काँपते बच्चे तक भी यह ऊष्मा पहुँच सके।

गाँव के खुले चौक में बच्चे, बुजुर्ग और तरुण—लगभग 80 लोग—अश्रुपूरित कृतज्ञता के साथ उपस्थित थे। भजन के स्वर थमे तो हरिपाठ ग्रंथों का स्नेहमय पूजन हुआ, और प्रसाद की सुगंध ने पूरे वातावरण को श्रद्धा से महका दिया। इसके बाद स्वामीजी ने पाँच घरों तक पैदल जाकर, अपने ही हाथों से हरिपाठ ग्रंथ सौंपे—जैसे किसी घर की देहरी पर आशा का दीप रख दिया गया हो।

दिन ढलते-ढलते, सेवा की यह रोशनी और भी फैली। श्री जयंतीलाल मालविया, प्रभुदासजी घरत और रोहन पांचगणे ने पूरे गाँव में हरिपाठ ग्रंथों का वितरण कर दिया। हर दरवाजे पर दस्तक, हर आँगन में मुस्कुराहट, हर आँख में चमक—मानो ग्रंथों के साथ विश्वास, संस्कृति और एकता भी घर-घर विराजमान हो गई हो।

आज का दिन केवल वितरण का नहीं, दिलों को जोड़ने का था—जहाँ कंबल ताप देते दिखे, स्वेटर सर्दी हरते नजर आए, और हरिपाठ ने मन की ठंडक पिघला दी। पेण से वरवणे तक फैला यह मानवीय आलोक बताता है कि जब हाथ सेवा के लिए उठते हैं और कदम आशीर्वाद बाँटने निकलते हैं, तब सर्दियाँ भी कम ठंडी लगती हैं—और जीवन, थोड़ा और उजला ।

शीव कल्याण केंद्र

वृत्त पत्रिका

नवंबर / दिसंबर 2025

अंक : 2

16 नवंबर 2025 को, शीव कल्याण केंद्र में श्री अशोक सिंघल रुग्ण सेवा सदन का नौवां वर्धापन दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन हनुमान टेकड़ी, माता रमाबाई आंबेडकर उद्यान, सायन कोलीवाड़ा, मुंबई 22 में किया गया।

इस अवसर पर आशीर्वचन देने के लिए श्रीमद् जगदगुरु रामानुजाचार्य और श्री स्वामी देवनाराणाचार्य जी महाराज ने अपने आशीर्वाद से कार्यक्रम की महत्ता को बढ़ाया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सजन जी बजाज, जो बजाज हेल्थकेयर लिमिटेड के चेयरमैन हैं, ने भी अपने विचार साझा किए। मुख्य वक्ता श्री विनायकराव जी देशपांडे, जो सह संगठन मंत्री हैं, ने हिंदू संस्कृति और समाज में एकता के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सभी को एकजुट होकर समाज के उत्थान के लिए काम करने की प्रेरणा दी। इस आयोजन ने न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक जागरूकता का भी एक महत्वपूर्ण संदेश दिया, जहां सभी ने मिलकर एक नई दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लिया।

इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था "अशोक मोबाइल ऐप" का लोकार्पण, इसके साथ ही, शिव कल्याण केंद्र की द्वैमासिक पत्रिका का विमोचन भी किया गया

“घरो घरी हरिपाठ” अभियान का शुभारंभ भी इस अवसर पर किया गया, जिसका उद्देश्य समाज में भक्ति और धार्मिकता को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम में 2026 की "वार्षिक दिन-दर्शिका" का लोकार्पण भी हुआ, जिसमें आने वाले वर्ष के कार्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी दी गई।

अंत में, कॉफी टेबल बुक का लोकार्पण किया गया, जिसमें "हिन्दू प्रतीक" और "हिंदुओं के पंथ और संप्रदाय" जैसे महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया।

कार्यक्रम का समापन **बाबा सत्यनारायण मौर्या** द्वारा विशेष प्रस्तुति "एक शाम देश के नाम" से हुई। उनकी प्रस्तुति ने सभी उपस्थित लोगों को प्रेरित किया और उन्होंने समाज के उत्थान के लिए एकजुट होने का संदेश दिया।

शीव कल्याण केंद्र

वृत्त पत्रिका

नवंबर / दिसंबर 2025

अंक : 2

सस्था के सेवा कार्यों की कुछ विशेष जानकारी

कुल संस्कारशाला	64
पढ़नेवाले बच्चे	944
किशोरी विकास वर्ग	19
कुल किशोरी संख्या	267
महिला सक्षमीकरण केंद्र	6
कुल लाभान्वित महिला	64
पेण में कुल मंदिर निर्माण	21
हरिपाठ ग्रन्थ वितरण	5000
पेण के जनजातीय गावों में कम्बल वितरण	8000
कुल सम्पर्कित जनजातीय गॉव	135